ISSN: 2582-7162

शोध पत्र

मध्यप्रदेश में बाल कुपोषण 0-6 वर्ष आयु वर्ग की स्थिति, कारण व बाल कुपोषण के निदानो एवं शासन द्वारा बाल कुपोषण के लिये किये जा रहे कार्यो का माताओं के ज्ञान, दृष्टिकोण व अभ्यास का एक अध्ययन, भोपाल शहर की मलिन बस्तियों के संदर्भ में

Vandna Singh Thakur[1], Panchuram Meena[2]

[1] Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University Maharaj Vinayak Global University , Amer, Jaipur (Raj.)
[2] Associate Professor, Maharaj Vinayak Global University Maharaj Vinayak Global University , Amer, Jaipur (Raj.)

Corresponding Author: Vandna Singh Thakur, Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University Maharaj Vinayak Global University , Amer, Jaipur (Raj.)
E-mail: vandanath253@gmail.com

सारांश

0–6 वर्श की आयु को पूर्व शालेय उम्र माना गया हैं। नवजात शिशु के जन्म के बाद की प्रारंभिक अवस्था को 0–2 वर्ष शैशवावस्था, 2–6 वर्ष आरंभिक बाल्यावस्था माना गया हैं। छः महीने से तीन वर्ष की आयु के बच्चों में कुपोषण की गति तीव्र होती हैं। बच्चें के जन्म के पहले 1000 दिन (मॉ के गर्भधारण करने से लेकर)बच्चें के स्वास्थ्य और उसके शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं, शिशु के जन्म के बाद के यह प्रांरभिक दिन उसे मिलने वाले पोशण पर निर्भर करते हैं सही पोशण शिशु को जीवन भर स्वस्थ्य रहने के लिए किसी वरदान से कम नही हैं। बच्चों के पोषण स्तर को बनाए रखने में माताओं के ज्ञान की भूमिका ही नही अपितु दृष्टिकोण को व्यवहार में लाने हेतु अभ्यास का होना भी अतिआवश्यक हैं। माताओं को स्तनपान व पोषण के संबंध में ज्ञान और दृष्टिकोण, व अभ्यास की अभी बहुत आवश्यकता हैं। पूरक अहार और कुपोषण के अंतर्निहित कारको के प्रति माताओं का न केवल ज्ञान और दृष्टिकोण कम हैं बल्कि अभ्यास भी बहुत ही कम हैं, जिसके कारण बच्चें कुपोषित हो जाते हैं।

शब्द संकेत : पूर्व शालेय उम्र, शैशवावस्था,बाल्यावस्था, कुपोषण, स्तनपान, अंतर्निहित।

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non commercial-share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: Thakur V. S.,Meena P. मध्यप्रदेश में बाल कुपोषण 0–6 वर्ष आयु वर्ग की स्थिति, कारण व बाल कुपोषण के निदानो एवं शासन द्वारा बालकुपोषण के लिये किये जा रहे कार्यो का माताओं के ज्ञान, दृष्टिकोण व अभ्यास का एक अध्ययन, भोपाल शहर की मलिन बस्तियों के संदर्भ मेंण SDES-IJIR; 2023; 5-1: 761-766

Submitted:26-January-2023; Accepted: 07-February-2023; Published: 6-March-2024

प्रस्तावना

मलिन बस्तियां शहरी समाज का अभिन्न अंग हैं, यहां के निवासियों को सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध नहीं होती हैं। इस कारण यहां के लोग अस्वच्छ, अस्वस्थ एवं असुविधापूर्ण वातावरण में निवास करने को मजबूर होते हैं। इन बस्तियों में मूलभूत सुंविधाओं की कमी होने के कारण यहां निवास करने वाले परिवारो के बच्चों को कई गंभीर बिमारियां अनजाने में ही मिल जाती हैं।

कुपोषण सबसे ज्यादा बच्चों को ही प्रभावित करता हैं। कुपोषण एक ऐसी विकृतिजन्य दशा हैं, जो एक या एक से अधिक पोषक तत्वों के किसी अनुपात या पूर्ण रूप से कमी अथवा आधिक्य के कारण उत्पन्न होती हैं।

दक्षिण एशिया के देशो की तुलना में भारत सबसे आगे हैं, भारत में कुपोषण के कारण पांच साल से कम उम्र के लगभग दस लाख बच्चों की प्रतिवर्श मृत्यु हो जाती हैं। हमारे देश में कम वजन के बच्चों का प्रतिशत सबसे अधिक हैं, कुपोषण के मामले में

भारत अभी सबसे अधिक कुपोषित देशो में से एक हैं। भारत में प्रति एक हजार बच्चों में से 60 बच्चों की मृत्यु कुपोषण के कारण होती हैं। कुपोषण की दर में वृद्धि न केवल शिशु मृत्यु दर को बढ़ाती हैं, बल्कि इससे देश का समग्र विकास भी बाधित होता हैं।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4, वर्ष 2015–2016 की तुलना में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–5में देश में कुपोषण की दर में वृद्धि हुई हैं, 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशो के पांचवे दौर के आंकड़ों से ज्ञात होता हैं कि केवल 9 राज्यों में विकसित बच्चों की संख्या में कमी पाई गई, जबकि 10 राज्यों में कमजोर बच्चों में और छहः राज्यों में कम वजन वाले बच्चों में थोड़ी कमी पाई गई, व 13 राज्यों में अविकसित एवं एनीमिक बच्चों केप्रतिशत में वृद्धि हुई हैं, अधिकांश राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशो में बच्चों में कुपोषण बढ़ रहा हैं।

मध्यप्रदेश के शहर इंदौर, जबलपुर, सागर, रीवां, संभाग में सबसे ज्यादा बच्चें कुपोशण की गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं, सरकार के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उन तक नही पहुंच पा रहा हैं। यह एक गंभीर चिंता का विशय हैं। अक्टूबर, नवंबर, और दिसंबर 2022 में अति गंभीर कुपोशित बच्चों की संख्या 20,728 थी ,जो केवल तीन माह जनवरी, फरवरी ,व मार्च 2023 में बढ़कर 21 हजार 631 हो गई। एन.आर.सी. की रिर्पोट वर्ष 2021 के अनुसार, म.प्र. में कुपोषण दर 64ः से बढकर 76ः हो गई हैं, जबकि जनजाति क्षेत्र में यह 80ः हो गई हैं। जिससे यह पता चलता हैं कि कुपोषण कम होने की बजाय बढ़ रहा हैं। वर्ष 2021 के पहले 8 माह में प्रदेश में 31 हजार 20 बच्चों में कुपोषण की पुष्टि हुई हैं इनमें से 21 बच्चों की मृत्यु हो गई, आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में प्रतिदिन 87 बच्चें कुपोशण की बीमारी से ग्रसित हुए हैं।

भोपाल सहित सात संभागो, ग्वालियर, इंदौर ,चंबल, रीवां, सागर, और उज्जैंन, में अतिगंभीर कुपोशित बच्चें पिछली बार से अधिक मिले यह सरकार के लिए गहन चिंता का विशय होना चाहिए, समाज के गरीब, वंचित, व असहाय लोगो तक प्रदेश शासन द्वारा किये जा रहे प्रयास पर्याप्त नही हैं, इस दिशा में अभी और गंभीर प्रयास की जरूरत हैं ताकि असहाय, निर्धन, कमजोर लोगो तक सरकारी सहायता का लाभ पहुंच सके व उससे समाज का हर वर्ग लाभांवित हो सके।

अध्ययन की अभिकल्पना

बर्न्स, नैन्सी, ग्रोव, व सुसान. (2008) :– के अनुसार अनुसंधान अभिकल्पना एक अध्ययन के संचालन के लिए नक्शा/ ब्लू–प्रिंट हैं जो उन कारको पर नियंत्रण करता हैं जो अध्ययन के वांछित परिणाम में हस्तक्षेप कर सकते हैं। यह अभिकल्पना के प्रकार, जनसंख्या के चयन, न्यादर्श प्रक्रिया, माप के तरीकों और आंकड़ों के संग्रह और विश्लेषण के लिए योजना को निर्देशित करता हैं। अनुसंधान अभिकल्पना का चुनाव शोधकर्ता की विशेषज्ञता पर निर्भर होता हैं।वर्तमान अध्ययन में एक समूह पर पूर्वपरीक्षण (PRE -TEST) व पश्चात परीक्षण (POST- TEST) अभिकल्पना का उपयोग कर बाल कुपोशण पर "कुपोषण से बचाव पुस्तिका"द्वारा शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए किया गया था।

O_1 ⟶ X ⟶ O_2 ⟶

(PRE- TEST) (INTERVENTION) (POST- TEST)

अनुसधांन का क्षेत्र

मध्यप्रदेश के भोपाल शहर में 350 से अधिक अधिसूचित मलिन बस्तियां हैं। यह अध्ययन भोपाल की 5 शहरी मलिन बस्तियों जिसमें प्रत्येक बस्ती में 200 से 400 घर औरलगभग 1000 से 1200 व्यक्ति निवास करते हैं, में किया गया हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल शहर कि मलिन बस्तियों, नया बसेरा, नई बस्ती, अन्ना नगर, पंचशील नगर, भीम नगर का चयन किया गया है, ताकि बेहतर निष्कर्ष प्राप्त हो सके।

शोध की प्राक्कल्पनाएंः

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने निम्नलिखित प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया हैं।

1. कुपोषण की रोकथाम के संबंध में माताओं को पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करनेके पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के स्तर के मध्य सार्थक अंतर नही हैं।

2. कुपोषण की रोकथाम के संबंध में माताओं का पोषणज्ञान के प्रति दृष्टिकोण के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के बाद के स्तर के मध्य सार्थक अंतर नही हैं।
3. कुपोषण की रोकथाम के लिए माताओं का पोषणज्ञान के अभ्यास के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के स्तर के मध्य सार्थक अंतर नही हैं।
4. मलिन बस्तियों में रहने वाली माताओं का, "कुपोषण से बचाव पुस्तिका" के अभ्यास द्वारा शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के स्तर में सार्थक अंतर नही हैं।
5. जनसांख्यिकीय चरो और पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण, के स्तर के मध्य सार्थक अंतर नही हैं।

शोध प्ररचना एवं विधि तंत्र

न्यादर्श चयन के मापदंड

समावेशन मानदंड

1. भोपाल शहर की मलिन बस्तियों के लिए किए गए, शोध अध्ययन के लिए वह माताएं जो निर्धारित मानदंड को पूरा करती हैं।
2. इस अध्ययन के लिए हिन्दी भाषी परिवारो का चयन किया गया था।
3. इस अध्ययन के लिए चयनित परिवारो ने स्वयं सम्मिलत होने की सहमति प्रदान की हैं।

बहिष्करण मानदंड

1. वह माताएं जो आंकड़ों कें संग्रह के समय पर उपलब्ध नही हो सकी।
2. वह माताएं जिनके बच्चें कुपोषित नही हैं।

सौद्देश्यीय निदर्शन विधि :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण अथवा सविचार निदर्शन को आधार बनाकर दैव निदर्शन (Random Sampling) का मार्ग चयन किया गया हैं।

आंकड़ों का संग्रह उपकरण और तकनीक :– अनुसंधान समस्या में प्रमुख चरो को देखने या मापने के लिए शोधकर्ती द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाएं, उपकरण हैं।

उपकरण के प्रकार :–

1. **मानकीकृत उपकरण**:–यह वे मानकीकृत उपकरण होते हैं जिनका निर्माण मानवीय व्यवहारों के कतिपय पक्षों अथवा आंतरिक गुणों को मापने के लिए किया जाता हैं। ये पूर्ण निर्मित, विश्वसनीय व वैध होते हैं।
2. **अमानकीकृत उपकरण या स्वनिर्मित उपकरण** : – प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ती ने अमानकीकृत उपकरण या स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया हैं। बाल कुपोशण व उससे बचाव पर शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाली, मलिन बस्तियों में रहने वाली माताओं के बीच बाल कुपोषण की रोकथाम के महत्व के बारे में ज्ञान का आंकलन करने के लिए एक स्व–संरचित ज्ञान प्रश्नावली तैयार की गई थी। यह पत्रिकाओं, पुस्तकों, शोध प्रतिवेदनो, व व्यक्तिगत अनुभव, एवं अन्य विषयों से निकाले गए साहित्य पर आधारित थी।

मुख्य शोध अध्ययन एवं आंकड़ों का विश्लेषण : दिनांक 24/02/2023 से 24/06/2023 तक मुख्य शोध कार्य समपन्न किया गया। मध्यप्रदेश के भोपाल शहर की मलिन बस्तियों के लिए किए गए इस अध्ययन के लिए 300 परिवारों का चयन किया गया हैं। इसके लिए सोद्देश्यीय निदर्शन विधि (Purposive Random Sampling Method) अपनाई गई ताकि शोध हेतु प्रत्येक सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व संभव हो सके। कुल चयनित 300 कुपोषित बच्चों की माताओं का चयन प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु किया गया।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.1.2024:761-766

सारणी क्रमांक. 4.1

माताओं को पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के, पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण, के श्रेणी वर्ग (grades) की तुलना

क्रमांक	पोषण ज्ञान शिक्षा प्रदान करने की श्रेणी (**grades)**	पूर्व परीक्षण		पश्चात परीक्षण	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	0-3 औसत	186	62.0	33	11.0
2.	4-6 उत्तम	94	31.3	153	51.0
3.	7-9 उत्कृष्ट	20	6.7	114	38.0
	योग	300	100.0	300	100.0

उपरोक्त सारणी माताओं को पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करनेके, पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण, के प्रतिशत की श्रेणी वर्ग (grades) की तुलना दशार्ती हैं।

विश्लेषण

सारणी क्रमांक–4.2ए का अवलोकन करने से ज्ञात होता हैं की, पोशणज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के पूर्व परीक्षण में 186 (62%) माताओं ने, औसत श्रेणी प्राप्त की, 94(31.3%) माताओं ने उत्तम श्रैणी, प्राप्त की व 20(6.7%) माताओं ने उत्कृष्ट श्रेणी प्राप्त की थी।

फिर इन माताओं को "कुपोशण से बचाव पुस्तिका" के द्वारा ज्ञान प्रदान कराने के पश्चात प्रश्नावली के उसी प्रारूप से उनका मूल्यांकन किया गया।

पोशण ज्ञान की शिक्षाप्रदान करने के पश्चात परीक्षण में 33 (11.0%) माताओं ने, औसतश्रैणी प्राप्त की, 153(51.0%) माताओं ने उत्तम श्रैणी प्राप्त की व 114(38.0%) माताओं ने उत्कृश्ट श्रैणी प्राप्त की थी।

• निश्कर्ष :–माताओं को"कुपोशण से बचाव पुस्तिका" के द्वाराज्ञान प्रदान कराने के पश्चात, पोशण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के वर्गो की श्रैणी में उपरोक्त अनुसार सुधार हुआ।

उद्देश्य क्रमांक –1

1. बाल कुपोषण की रोकथाम के संबंध में माताओं को पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान किये जाने के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के बाद के स्तर का अध्ययन करना।

सारणी क्रमांक–4.3

माताओं को पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के मध्यमानो में सार्थकता का स्तर

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	मध्यमान	प्रमाप विचलन	**'t'** मूल्य, स्वातंत्र्य कोटी, का मान	"पी" का मान सार्थकता स्तर
1.	पूर्व परीक्षण	300	3.56	1.61	-17.524, df=299	0.001*
2.	पश्चात परीक्षण	300	6.08	1.91		

Paired 't' test applied. P value=0.001, Significant

उपरोक्त सारणी माताओं को, पोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करनेके पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के मध्यमानो में सार्थकता के स्तर को दशार्ती हैं।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.1.2024:761-766

विश्लेषण

सारणी क्रमांक –4.3, का अवलोकन करने से ज्ञात होता हैं कि, माताओं कोपोशण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने केपूर्व परीक्षण व पश्चातपरीक्षण की गणना करने पर मध्यमान, क्रमशः 3.56 वंए 6.08 प्राप्त हुए हैं, एवं मानक विचलन का मान1.61 व 1.91ए प्राप्त हुआ हैं। इनसे प्राप्त't' का मूल्य.17.524ए हैं जो किस्वातंत्र्य कोटी का मान 299के लिए सार्थकता के स्तर (p =0.01),पर सारणीयन मूल्य 2.59 से कम हैं अतः सांख्यिकीय रूप से इसमें सार्थक अंतर पाया गया।

निश्कर्ष –उच्च मध्यमान माताओं कोपोषण ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के परीक्षण पश्चात के अकों को दर्शाता हैं, अतः शून्य परिकल्पना क्रमांक– 1. बाल कुपोषण की रोकथाम के संबंध में माताओं का पोषण ज्ञान के पूर्व परीक्षण और पश्चात परीक्षण के स्तर के मध्य सार्थक अंतर नही हैं,को असविकृत किया जाता हैं।

भाोध के प्रमुख निष्कर्ष

सांख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात् प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं।

1. मलिन बस्तियों में निवास करने वाले परिवारो में, शहरी गरीब व कमजोर वर्ग, अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों तथा पिछर्डे वर्गों के अधिकांश परिवारों में स्वास्थ्य एवं पोषण के बारे में जानकारी का सर्वथा आभाव पाया गया।
2. मध्यप्रदेश में कुपोषण की स्थिति राष्ट्र की औसत कुपोषण से अधिक हैं। प्रदेश के अर्न्तजिला विश्लेषण में यह बात स्पष्ट होती हैं कि मध्यप्रदेश के अधिकांश जिलो मे कुपोषित बच्चों एवं अति कुपोषित बच्चों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत इन वर्गों के राष्ट्रीय औसत से अधिक हैं।
3. विभिन्न सामाजिक वर्गों में धात्रियों एवं कुपोषित बच्चों का प्रतिशत अलग–अलग हैं। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछर्डे वर्ग के लोगों शहरी निर्धनों (जिसमें झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले लोग सम्मिलित हैं, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या में इसकी मात्रा शेष जनसंख्या में कुपोषण की मात्रा से अधिक हैं।
4. टीकाकृत माताओं का कुल माताओं से प्रतिशत का औसत प्रदेश में 36.1 है जो काफी कम हैं। पोषण के बारे में जानकार माताओं का कुल माताओं से प्रदेश में औसत 23.0 प्रतिशत हैं। इसका तात्पर्य हैं कि अधिकांश माताओं को पोषक तत्वों के बारे में पर्याप्त जानकारी नही हैं।
5. कम वजन वाले जन्मित बच्चों का कुल जन्मित बच्चों से प्रतिशत प्रदेश में लगभग 20.5 प्रतिशत हैं जिससे कुपोषण जैसी गंभीर समस्या की प्रदेश में स्थिति स्पष्ट हो जाती हैं।
6. प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित लगभग सभी बाल समूहों एवं उनके परिवारों में कुपोषण एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का अभाव पाया गया, जिसकी वजह से बच्चे बाल्यावस्था में एवं माताएं गर्भकाल में कुपोषित हो जाती हैं, और यह कुपोषण कमजोरी एवं कई जानलेवा बीमारियों का कारण बन जाता हैं, इसके अतिरिक्त शिशु एवं बाल्यावस्था का कुपोषण व्यक्ति के पूरे जीवन के लिए अभिशाप बन जाता हैं। इससे जहाँ राष्ट्रीय उत्पादकता का स्तर नीचा रह जाता है, वही सामाजिक विकास की गति भी धीमी हो जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमारी शोभा (1998) आदिवासी क्षेत्र में प्रोटीन एवं अन्य आवश्यक अवयवों की कमी एवं उसकी उपलब्धता पर एक अध्ययन, पी.एच.डी., शोध प्रबंध, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
2. एम.स्वामीनाथनः इसेन्सियल्स ऑफ फूड न्यूट्रीशन, वाल्यूम–11, पृष्ठ संख्या 334,1974.
3. ए.के अरोड़ा एवं सहयोगीः सोशल कस्टम बिलीप्स रिगार्डिंग ब्रेस्ट फीडिंग, इण्डियन पीडियाट्रिक्स 1985.
4. के.पद्मजाः (जुलाई 2005) सर्वाधिक उपेक्षित क्षेत्र स्वास्थ्य का योजना, पृ.सं. 33–41
5. Agarwal, Lokesh, et. al. (2014) Current Status of Nutrition among under Five Children of Slum Areas of Agra. Journal of Evolution of Medical and Dental Sciences; Vol. 3, Issue 58, pp- 13120-13125, DOI: 10.14260/jemds/2014/3744

6. Goode, WJ and Hatt, PK 1952 Methods in Social Rsearch, New York: Mcgraw-Hill Book Co.
7. Kumar, Anil (2017) Breastfeeding Practices at Delivery Points in India: A Case Study of Two Government Hospitals of Kanpur City in Uttar Pradesh, Research Journal of Philosophy and Social Sciences, Vol. 43, No.2, pp-169-79.

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.1.2024:761-766